

मध्येत्यां डक्षितरम् war verliebt in ४,२,१०. — ३) lesen, studiren, auswendig hersagen: अधीनि॒ इ॒ RV. Prāt. १३,२. पदि॑ ना॒ अधीयात् आ॒ च॒ वा॒ ग्रं॒ भ॒ १,१३,२. अध्यायम् absol. Panéka॒ वा॒ १५,३,१९. अधीत्य वाराह॒ ब्र॒ S. ६८,११७. — II. Ind. St. ४,११. गान्ध॒ वा॒ ४,६. pass.: वे॒ दो॑ नित्यमधीयताम् Spr. २८९४. अधीते॑ इपि॑ वे॒ दो॑ सर्वादार्चना॑ १२४,३. अधीतपूर्व, अनधीतपूर्व आ॒ च॒ ४,१४. TAITT. UP. S. ३०. १२२.

— उपाधि॑ vgl. उपाध्याय.

— प्राधि॑ vgl. प्राध्ययन.

— अनु॑ १) तमन्वेतोरा॑ वहृवः MBn. २, २१९५. — ६) hineingehen in (loc.): अन्तीय (= अनुप्रविश्य Schol.) BHAG. P. ४०, ४६, ३१. — ७) kennen (= ज्ञा Schol.): अन्वयति॑ BHAG. P. ४०, ८७, १९. — अन्तीत = अन्वित १): मुदा॑ र-माणमन्तीतम् — कर्तुम् mit Wonne zu erfüllen Spr. ४७२९.

— समनु॑, पर्वंशसमन्वित versehen mit, wozu hinzugefügt —, addirt worden ist WEBER, श्रूति॑ ७२.

— अपि॑ १) RV. Prāt. १०, १४. Z. ९ lies verschwinden st. abgehen, fehlen und fuge पवक् nach अपैति hinzu. — अपैत geschwunden RV. Prāt. ११, १२. प्रवृत्तेरपेतोः स्वरा॑: so v. a. unnatürliche VARĀH. Brn. S. ९०, २. को हि॑ नाम शरीरा॑ धर्मापेतं समाचरेत् so v. a. ein Unrecht Spr. ३४८.

— अपि॑, अपैत getrennt (Gegens. सक्ति॑) Spr. ४२६८.

— अभि॑ ३) अपियत् �vergehend (Gegens. अघ्यत्) BHAG. P. ४०, १४, २२.

— अभि॑ १) यदाभ्येति॑ und अभितरामेति॑ wenn die Sonne hervor —, näher herankommt d. h. am Himmel herauf AIT. Br. ३, ४४. — ४) Z. ३ streiche ते vor अपनविषयं. Statt अप्येति॑ ist, wie STENZLER bemerkt, wohl mit MALLIN. अप्येति॑ zu lesen. Der Sinn der Stelle ist nach ihm: wenn du auch zu einer anderen Zeit (d. h. am hellen Tage) dahin kommst, so musst du doch so lange verweilen, bis die Sonne den Gesichtskreis überschreitet (d. h. bis sie untergeht und in der Abenddämmerung das Opfer vollzogen wird). — ७) erkennen, pass. अभीयते॑ BHAG. P. ४०, ३८, ११.

— समभि॑ ३) Jmd (acc.) zu Theil werden: पत्करोत्पहितं किंचित्काट्य-चिन्मृष्ट्यानासः। ते॑ समभ्येति॑ तव्वनम् Spr. ४७६४.

— अव॑ ३) ताँलोको॑ अयमवैति॑ लोकतिलकान्स्वप्ने॑ अप्यज्ञातानिव॑ die ser betrachtet die Welt als nicht da seiend Spr. २३१। इत्पवपत्यवृद्धा॑: BHAG. P. ४०, ८७, ३७. verstehen, mit einem infinit. KATHAS. ९६, ३५.

— अन्वय॑ ३) sich einlassen in (acc.): प्राज्ञ एव॑ कलह॑ नान्वैति॑ MBH. १२, ११०३३. — ४) Etwas erlernen (acc.): पज्ञो॑ दानमध्ययनं॑ तपश्च चला॑-र्येतान्यन्वेतानि॑ सद्गः। दमः॑ सत्यमार्जवमानृशंस्य॑ चवर्येतान्यनुगाति॑ मनः॑: MBn. ३, १२३६, १२३५.

— उपाव॑ १) नित्रामर्चिन्युपैति॑ die Flamme zieht sich nach unten, sinkt zusammen TBr. २, १, १०, २.

— प्रत्यव॑ sich vergehen, sündigen: ननु॑ विक्षिताकरणात्प्रत्यवैतीति॑ गुतो॑ अवसितम् MIt. III, ४३, ३, ३. — Vgl. प्रत्यवाय.

— व्यव॑ Ait. Br. ३, १४. — Vgl. व्यवाय.

— समव॑, समवेत॑ in Etwas enthalten, inhärend: कार्य॑ TAKAS. २२. SARVADARÇANAS. १०६, १४३, १०. Igg. समवेतार्थ॑ वचस्॑ inhaltsreich, sinnvoll BHAG. P. ४०, ८३, २२. — Vgl. समवाय, समवायन्.

— आ॑ १) वाष्ठ॑मेत्य पुनक्ति॑ शशाङ्कः: VARĀH. Brn. S. ४७, १८. — ३) स्व-र्येमध्यमेत्य॑ zwischen zwei Vocale zu stehen kommend RV. Prāt. १, ११.

योग॑ समेतः VARĀH. Brn. S. २४, २९. मूलवृत्तमेत्य॑ DAÇAK. in BENF. Chr. १८९, ४. Statt एयुपः R. २, ६३, २८ lesen die edd. Bomb. und GORR. (२, ६७, २२) ईयुपः; der Schol.: उपेयुपः (sic) प्राप्तस्य.

— उदा॑, उदेविवेस॑ hervorgegangen, entstanden, geboren = उदित॑ Schol.) BHAG. P. १०, ३१, ४.

— प्रत्या॑, प्रत्येपाय स्वकं धाम BHAG. P. ४४, १३, ४२.

— समा॑ १) व्रजतु॑ तव॑ निदायः कामिनीभिः॑ समेतः (समेतम्॑ v. १) im Verein mit RT. १, २८.

— परिसमा॑ umkehrend sich wohin (acc.) begeben BHAG. P. ४०, ६६, ५०.

— उद्य॒ २) heliakisch aufgehen VARĀH. Brn. S. ८, १९, ९, ११, १४, २०, ४. उद्यते॑ १३, ४. — ३) उद्यत॑ hervorgehend, entstehend (Gegens. अपियत्) BHAG. P. ४०, १४, २२. — ५) उदितपृथ्वयना॑ भुवः so v. a. uppig geworden (उदित = ऊर्जित MALLIN.) KIR. ३, ५. समूलायातमव्यतः परावायनि॑ मानिनः। प्रधंसिनान्धतमस्तत्रोदाहरण॑ र्वेः। || sich erheben so v. a. stolz thun (zugleich aufgehen von der Sonne) Spr. ५१७. aufsteigen so v. a. wachsen, an Zahl zunehmen: चतुरुत्तमुद्यति॑ पञ्च छन्दासि॑ तानि॑ द्व RV. Prāt. १७, ११. उदित॑ im Gegens. zu शात॑ Verz. d. Oxf. H. २२९, b, २९, ३२. Das Beispiel BHART. ३, ४१ (wo वेदः को अपि॑ vor स hinzuzufügen ist) gehört zu ३); vgl. Spr. १९९३.

— अयुद॑ १) अरुणो॑ अयुदये॑ चक्रे॑ तापीकुर्विवाम्बरम् MBn. ७, ८४५४.

अभिनिर्मुक्तः॑: (d. i. अभिनिमुक्तः॑) सूर्यो॑ वान्युदितः BHAG. P. ४१, २६, ८. heliakisch aufgehen VARĀH. Brn. S. ६, ७.

— प्रोद॑, प्रोद्यत्प्रियङ्क॑ Spr. १९२८.

— समुद॑ ४) प्रशाविक्रमभक्तयः॑ समुदिता॑ येषां गुणा॑ भूत्ये॑ vereinigt MUDRĀR. ७, ९. — ५) गुणसमुदितेषु॑ पुरुषेषु॑ Spr. ५३६६. — Vgl. समुद्र॑. समुद्राय.

— उप॑ १) वनमेक॑ उपेयिवान्॑ begab sich N. १३, ३२. अस्तमुपैति॑ geht (heliakisch) unter VARĀH. Brn. S. १२, २१. मात्राविशेषः॑ प्रतिवृत्युपैति॑ eintritt, sich einstellen RV. Prāt. १३, १४. Sp. ७६८, Z. ७ lies ३३, ११ st. ३३.

— १. R. २, ३४, ३३ hat die ed. Bomb. richtig उपेयुपः. — ३) दिव्यवर्यमहत्वं प्रमोदनिद्रामुपेयः॑: Sāh. D. ३१, ११. Z. २ vom Ende lies पुनर्वाल्यमुपेयुपः (so die ed. Bomb.) — ६) einstimmen, einfallen (vgl. उपाय॑ २.): निधनम् CĀNKU. Ch. ४, १०, ५, १०, २१, १२. — ७) erreichen (mit dem Verstande), begreifen: न वस्त्वनाकारमुपैति॑ वृद्धिः॑: SARVADARÇANAS. ८४, ३. — उपैति॑ १) gekommen um Schutz zu suchen: ऋवत्स्तल॑ Spr. ३९३७. राशिमुपैतः॑ gekommen in so v. a. stehend in VARĀH. Brn. S. १०४, २९. — Vgl. उपाय॑ fg., उपायिन्॑ fg., उपेत्॑ र॑ fg., उपेय॑.

— अयुपः॑, auch die ed. Bomb. अयुपैय॑ति॑.

— अभ्युप॑ १) Jmd (acc.) entgegengehen BHAG. P. ४०, ७१, ३४. गृहमभ्युपेतः॑: so v. a. stehend in VARĀH. Brn. S. १०४, ४२. अभ्युपेत �am Ende eines comp. versehen mit २१, ३४. Das letzte Beispiel gehört zu ३). — २) विवृद्धिमभ्युपैति॑ VARĀH. Brn. S. ७३, १०. Hir. III, ६१ gehört zu १); vgl. Spr. १४९९. — ३) zugeben: अभ्युपैते॑ ३. sg. pass. SARVADARÇANAS. ५२, २१, ७१, ६, ९४, ५.

— समोप, बलवीर्यसमोपेत R. ७, ३७, ५, १०.

— प्रत्युप॑ vgl. प्रत्युपेय.

— व्युप॑ sich vertheilen in oder über Etwas KĀTH. २९, ७.

— समुप॑ १) RV. Prāt. १८, ३२. — ३) विवृद्धिं॑ समुपैति॑ VARĀH. Brn. S. २४, ११. दोषान्॑ die schlechten Folgen erfahren ४६, ३७. मृत्युम्॑ ६९, २६.

— नि॑, भेद॑ नीयात् CĀNKU. Br. ४, १.